विद्यापतिक काल निर्धारण

काल निर्धारण → प्राचीन कालक विद्वान लोकनि मे प्रायः ई देखल जाइत अछि जे ओ लोकनि अपन रचना मे अपन समस्त सूचना नहि दैत छथि। विद्यापतिक सम्बन्ध मे इएह बात छैक। विद्वान लोकनि मे अनेक तरहक मतभेद अछि। हिनक समय जानबाक आधार हिनका द्वारा रचित ग्रन्थ अछि संग अछि से तकर अतिरिक्त जाहि-जाहि राजा लोकनिक संगे सम्बद्ध रहलाह तिनका लोकनिक जीवन वृतान्त सेहो अवलोकनीय अछि। विद्यापति अपन जन्म आ मृत्युक सम्बन्ध मे स्फुट रूपेँ कोनो साल अथवा ई.क उल्लेख नहि कएने छथि। मात्र एक गीत रचना मे ओ अपन मृत्युक तिथि उल्लेख कएने छथि। मुदा ओहि सँ हुनक जन्म वा मृत्युक समय निर्धारण सम्भव नहि। तखन जे कि विद्यापति बहुतो राजा रानीक दरबार मे एक उच्च पद पर आसीन छलाह। तथा ओहि राजा रानीक समयक उल्लेख बहुत ऐतिहासिक महत्वक अछि। आ जे बहुत ऐतिहासिक ग्रन्थ सब मे पाओल जाइत अछि। से ओहि

आधार पर विद्यापतिक समयक निर्धारण कएल जा सकैछ।

कीर्ति सिंहक सँ लऽ नरसिंहक समय धरि अनेक राजा - रानी मिथिलाक राजगद्दी पर बैसलाह। हुनका लोकनिक संग विद्यापतिक उपस्थितिक सूचना इतिहास मे वर्णित अछि। ई बात दोसर थीक जे कोनो राजा अथवा रानीक संगे विद्यापति मिथिलाक सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक धरातल पर बेशी प्रभावकारी छलाह। वा ककरहु समय मे कम मुदा ककरहु समय मे हुनका प्रति आकर्षक गौण बनल रहलन्हि। कहल जाइत अछि जे विद्यापति जखन दस - बारह बरखक छलाह तखन अपन पिता गणपति ठाकुरक संग राज दरबार मे जाइत छलाह। गणपति ठाकुर मिथिलाक राजदरबारक एक उच्च पदाधिकारी छलाह। राजदरबारक सम्पर्क मे बाल्यावस्थहि सँ रहबाक कारणे विद्यापति राजदरबारक - बहुत किछु बात बुझैत छलाह। ओहि ठामक चालि चरित्र ओ शासन तन्त्र बहुतो बात सँ परिचय भेल छलाह *

प्रतिभा हुनका मे बाल्यावस्थहि सँ छलन्हि आ तेँ राजा कीर्तिसिंहक गुणगान मे कीर्तिलता नामक एक ग्रन्थक निर्माण कएलन्हि। अवहट्ठ मे रचित एहि मे ई अपनाकेँ खेलन कवि कहने छथि। कतेको विद्वान एहि खेलन शब्द मे अनेक तरहक तर्क तारतम्य सेहो उपस्थित करने छथि। मुदा एहि शब्दक समीचीनता एहि लऽ कऽ प्रतीत होइछ जे ई रचना हुनक प्रारंभिक रचना थिकन्हि। साहित्यिक परिपक्वता ओहि रचना मे अभाव बुझैत छलाह तेँ मनोविनोदमात्र करबेर

③

ओ हि रचना के रचनाक कारणे आपना के खैलाल रवि कहने छैथि। मुद्दा जे के हैनको अपना भाषा स्वं भाव पर पूर्ण आस्था छलन्हि तें अपना ओहि प्रारम्भिक रचना के ओ नव उदित चन्द्रमाक संग ... किन्तु ... कीर्तिलताक सम्बन्ध मे इस्ट धारना स्वैत छथि जे ओ विद्यापतिक रचना नहि थिकैन्ह मुदा इ निर्मधारा नहि थिक।

(१) समुद्र ... (२) कर (२) (३) अग्नि ३ (४) शशि (४) = ४२३१ उनटा मे १३२४ ई० नद संवत तीन प्रकारक आगि (१) अनल – आगि (२) रध्यु-छैद (✓) (४) लक्खन-लक्षण (३) कर – दो हाथ (५) लक्खण नाखई लक्षण संवत अर्थात – ३२२ उनटा सं २०३ अर्थात लक्षण संवत ...	आगे रहि आधार पर देव सिंह संगाक ... बाद राजा शिवसिंह गद्दी पर बैसलाह रहि पदक अनुसार लक्ष्मण संवत २०३ अर्थात शाके संवत १३२४ मे राजा शिव सिंह गद्दी पर बैसलाह इतिहास कार स्वं विद्वान लोकनिक इ नहि छैन्ह जे राजा शिवसिंह विद्यापतिके समकालिक छलाह तें इ नवतरुण गोरे मे स्नेक बेसी घनिष्ठता छल। उक्त कृतिक आधार पौरत इनका लोकनिक इ कथन थैहि रो विद्यापति शिव सिंह से भाग दु वर्षक जेठ छलाह। आरहि तरहे समलोन्स्क हैयबाक कारणे विद्यापति

(५)

शिव सिंहक आश्रयदाता नाम बुझैत
छलाह आ तें हुनका विद्यापति प्रत्येक
विस्तृत विवरण करैत छथि। प्रायः
विद्यापतिक पदावली मे सँ अधिकांशतः
राजा शिव सिंह आ रानी लखिमाक
नामोल्लेख अछि। कतेको स्थल मे
इहो स्पष्ट अछि जे शिव सिंह के विद्या
पति एकटा सखा मानैत छलाह
तकर प्रतिफलन ई भेल जे राजगद्दी
पर बैसलाक तुरत बाद शिवसिंह
हुनका बिसपी ग्राम दान स्वरूप
देल। विद्यापतिक एकटा पद अछि

"अनल रन्ध्र कर लक्खन नरवइ
सक समुद्र कर अगिनि ससि" १३
१३२४ शाके १४०२ ई० होइत अछि।
एहि तरहें १४०२ ई० मे राजा शिव
सिंहक गद्दी पर आसीन होयबाक
समय निश्चित होइत अछि। ई कि
[illegible] अछि जे राजा शिव सिंह मात्र
चारि वर्ष धरि शासन करलन्हि। तकर
[illegible] ई जे १४०६ ई० अन्तक समय
मे राजा शिव सिंह राजगद्दी पर विद्य
मान छलाह आ ओहि समय मे दिल्ली
सुलतान सँ हुनका युद्ध करय पड़
लैन्ह। जाहि युद्ध मे हुनका की मे
लैन्ह ओ मारल गेला अथवा कतहु
भागि गेला। तकर निश्चित पता कत
हु नहि प्राप्त होइछ। ई जनश्रुति
अछि जे राजा शिव सिंह पचासम
५० वर्षक अवस्था मे राजगद्दी
पर बैसलाह आ एही बात [illegible]
छलाह तरुण विद्यापति

५२ लगैत। एहि सँ ई सिद्ध होइत अछि जे
विद्यापतिक जन्म २४३ लक्ष्मण संवत घटा
५२ अर्थात २४१ लक्ष्मण अर्थात १३५० ई०
मे विद्यापतिक जन्म भेल होइत। किछु विद्वान
लोकनि १३५० ई० मे विद्यापतिक जन्म नहि
मानि १३६० ई० मे मानैत छथि। ई १० वर्ष
क गड़बड़ी लक्ष्मण संवत गणनाक गड़बड़ी
क कारणे भेल अछि। ~~किछो किछो~~ कोनो
कोनो विद्वान ११०९ ई० मे राजा लक्ष्म
णसेनक जन्मक अवसर लक्ष्मण संवतक
आरम्भ मानैत छथि। जखन कि किछु
विद्वान १११९ ई० मे, जहिया लक्ष्मण
सेन राजगद्दी पर बैसलाह। ओहि उपलक्ष
मे लक्ष्मण संवत शुरुआत मानैत छथि।
एहि तरहे जे विद्वान ११०९ ई० मे लक्ष्मण
संवतक आरम्भ मानैत छथि। हुनका हिसाबे
११०९ + २४१ = १३५० ई० मे विद्यापतिक जन्म
भेल होइत आ जे विद्वान १११९ ई० मे
लक्ष्मण संवतक आरम्भ मानैत छथि।
हुनका अनुसारे १११९ + २४१ = १३६०
मे विद्यापतिक जन्म भेल। विभिन्न इतिहास
कार लोकनि लक्ष्मण, संवतक सम्बन्ध
मे एहि प्रकारक तरहक विचारक पुष्टि करबा
क लेल विभिन्न प्रकारक तर्क देलन्हि।
(1) लेकिन किछो सामान्य तर्क जे अछि ताहि
आधार पर ११०९ ई० मे लक्ष्मण संवतक
आरम्भ मानल समीचीन होइत आ
ओहि हिसाबे १३५० ई० मे विद्यापतिक
जन्म सेहो किछु इतिहास महोदय सेहो
एहि मतक समर्थक छथि।

विद्यापतिक मृत्युक सम्बन्धमे

2) जेसेहो अनेक प्रकारक भ्रान्ति अछि।
ओ दीर्घायु छलाह एवं अनेक राजा

Scanned with CamScanner

रानी एहि समय मे विद्यमान रहलीह। हुनके
मृत्युसालक उल्लेख पूर्वक कोनो
साहित्यकार अथवा लेखक नहि
कएने छथि। विद्यापति एकर उल्लेख
कतहु नहि उल्लेख कएने छथि।
विद्यापतिक एक पद, अछि जाहि मे ओ
अपन मृत्यु तिथिक चर्चा कएने छथि
ओ एक महान पुरुष छलाह। ई बहुत
पैघ शिवभक्त छलाह इ सम्भव जे
हिनका अपन मृत्युक निश्चित समयक
पूर्वाभास भए गेल होइन्हि।
ते हुनक पद मे तिथिक उल्लेख जे अछि
से समीचीन बुझना जाइछ। विद्यापति
एक दोसर पद अछि जाहि मे ओ स्पष्ट
उल्लेख कएने छथि जे शिवसिंहक
मृत्युक (अज्ञात) 32 वर्ष बाद विद्यापति
शिवसिंहक विकृत रूप स्वप्न मे देखने
रहथिन्ह। शास्त्रक गणनाक आधार पर
विवेचन कएला पर विद्यापतिकेँ ई
स्पष्ट भए गेल होएतन्हि जे हुनक मृत्यु
आब समीप आबि गेल अछि। कारण
ई कहल जाइछ जे एहि तरहक उल्लेख
शास्त्र मे भेल अछि जे अपन बड़ प्रिय
व्यक्ति केँ ओकर निधनक बहुत दिनक
बाद विकृतावस्था मे स्वप्न देखल
जाए से अपन मृत्यु निकट बुझबाक चाही,
ई निकट समय 6 किंवा दस मासक
अनुमान बुझना गेल अछि। पं
परमेश्वर झा अपन मिथिला तत्व
विमर्शनामक पोथी मे विद्यापतिक
एहि स्वप्न तथा ओहि आधार पर शास्त्री
गणनाक आधार पर सम्भावित
मृत्युक तिथिक विवेचन कएने छथि।

Scanned with CamScanner

तदनुसार कार्तिक धवल त्रयोदशी के जे
तिथि विद्यापतिक पक्ष सँ हुनक मृत्युक तिथि
सम्बन्ध मे स्थापित अछि से तकर संग्रह
करैछ। आ यदि एहि बातकेँ मानी तँ १४०२
ई० राजा शिव सिंह गद्दी पर बैसलाह
तथा १४०६ ई० मे हुनक मृत्यु अथवा
पलायन भेल आ तकर ३२ वर्षक
बाद अर्थात १४३८ ई० मे विद्यापति
स्वप्न देखय लागि आ ओहि वर्षक अन्त
धरि हुनक मृत्यु भेल। एहि सँ ई सिद्ध
होइछ जे विद्यापतिक जन्म १३५० एवं
हुनक मृत्यु १४३८ ई० ८८ वर्ष मे
भेल होइत।